



## सच्चा हीरा लघु कथा / छोटी कहानी

सायंकाल का समय था | सभी पक्षी अपने अपने घोंसले में जा रहे थे | तभी गाव कचिार ओरते कुए पर पानी भरने आई और अपना अपना मटका भरकर बतयाने बैठ गई |  
इस पर पहली ओरत बोली अरे ! भगवान मेरे जैसा लड़का सबको दे | उसका कंठ इतना सुरीला हैं किसब उसकी आवाज सुनकर मुग्ध हो जाते हैं |  
इसपर दूसरी ओरत बोली किमेरा लड़का इतना बलवान हैं किसब उसे आज के युग का भीम कहते हैं |  
इस पर तीसरी ओरत कहाँ चुप रहती वह बोली अरे ! मेरा लड़का एक बार जो पढ़ लेता हैं वह उसको उसी समय कंठस्थ हो जाता हैं |  
यह सब बात सुनकर चोथी ओरत कुछ नहीं बोली तो इतने में दूसरी ओरत ने कहाँ “ अरे ! बहन आपका भी तो एक लड़का हैं ना आप उसके बारे में कुछ नहीं बोलना चाहती हो” |  
इस पर से उसने कहाँ मैं क्या कहू वह ना तो बलवान हैं और ना ही अच्छा गाता हैं |  
यह सुनकर चारो स्त्रियों ने मटके उठाए और अपने गाव कचिार चल दी |  
तभी कानो में कुछ सुरीला सा स्वर सुनाई दिया | पहली स्त्री ने कहाँ “देखा ! मेरा पुत्र आ रहा हैं | वह कतिना सुरीला गान गा रहा हैं |” पर उसने अपनी माँ को नहीं देखा और उनके सामने से निकल गया |  
अब दूर जाने पर एक बलवान लड़का वहाँ से गुजरा उस पर दूसरी ओरत ने कहाँ | “देखो ! मेरा बलष्टि पुत्र आ रहा हैं |” पर उसने भी अपनी माँ को नहीं देखा और सामने से निकल गया |  
तभी दूर जाकर मंत्रो किध्वन उनके कानो में पड़ी तभी तीसरी ओरत ने कहाँ “देखो ! मेरा बुद्धमिन पुत्र आ रहा हैं |” पर वह भी श्लोक कहते हुए वहाँ से उन दोनों कभिातनिकिल गया |  
तभी वहाँ से एक और लड़का निकला वह उस चोथी स्त्री का पूत्र था |  
वह अपनी माता के पास आया और माता के सर पर से पानी का घड़ा ले लयिा और गाव कचिार निकल पड़ा |  
यह देख तीनों स्त्रीयां चकति रह गई | मानो उनको साप सुंघ गया हो | वे तीनों उसको आश्चर्य से देखने लगी तभी वहाँ पर बैठी एक वृद्ध महिला ने कहाँ “देखो इसको कहते हैं सच्चा हीरा”  
“ सबसे पहला और सबसे बड़ा ज्ञान संस्कार का होता हैं जो कसि और से नहीं बल्कस्वयं हमारे माता-पति से प्राप्त होता हैं | फरि भले ही हमारे माता-पति शक्ति हो या ना हो यह ज्ञान उनके अलावा दुनयिा का कोई भी व्यक्ति नहीं दे सकता हैं